हम होंगे स्मार्ट एक दिन

डॉ. इरफान ह्यूमन

हम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के नित नए आविष्कार अपनाते जा रहे हैं और देश में स्मार्ट सिटी बनाने की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं। आज स्मार्ट सिटी को एक मिशन का रूप दिया जा रहा है। स्मार्ट सिटी का तात्पर्य एक ऐसे शहर से है जो अपने नागरिकों को बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराए और उन्हें गुणवत्तापूर्ण जीवन प्रदान करे, जिससे एक स्वच्छ और टिकाऊ पर्यावरण एवं नवीन प्रौद्योगिकी पर आधारित कार्यप्रणाली का विकास हो।

स्मार्ट सिटी के किस्से हम विज्ञान कथाओं में पढ़ते आए हैं। स्मार्ट सिटी यानी बिना ट्रैफिक पुलिस के आधुनिक नियंत्रण प्रणाली, सेंसरयुक्त सड़कें, बिना ड्राइवर की कारें, गंदगी और प्रदूषण मुक्त शहर, जल को स्वतः प्रदूषणमुक्त बनाने वाली प्रणाली, स्वच्छ पेयजल सुविधा, ऊर्जा और जल संरक्षण की आधुनिक प्रणाली, त्वरित स्वास्थ्य सुविधाएं, 24 घंटे बिजली, बिजली उत्पादन की प्रदूषणमुक्त तकनीक, भूमिगत विद्युत केबल, ऑनलाइन, पारदर्शी और भ्रष्टाचारमुक्त कार्यप्रणाली जैसी सुविधाएं।

हमारे देश के राजनेता विदेशों में जाकर स्मार्ट शहरों को देखकर देश के गांव और शहरों को स्मार्ट बनाने की योजना बनाने लगे हैं, लेकिन इससे पहले देश के लोगों को शिक्षित करने के साथ उनमें वैज्ञानिक मनोवृत्ति विकसित करने की ज़रूरत है।

दुनिया के लोग स्मार्ट शहर की ओर बढ़ते नज़र आ रहे हैं, जहां ऐप्स, डीआईवाई सेंसर, स्मार्टफोन तथा वेब इस्तेमाल करने वाले लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है। डोंट फ्लश मी एक छोटा डीआईवाई सेंसर और ऐप है जो अकेले दम पर न्यूयॉर्क की पानी से जुड़ी समस्याओं को सुलझा रहा है। इसी तरह सेंसर नेटवर्क लोगों को शहर की समस्याओं के प्रति सचेत कर रहा है। आंकड़े बताते हैं कि हर वर्ष 20 लाख लोगों की मौत वायु प्रदूषण के कारण हो जाती है और शहरों में बढ़ती भीड़भाड़ के कारण यह समस्या बढ़ती जा रही है। लोग इन सेंसरों को अपने घरों के बाहर लगाकर हवा में मौजूद ग्रीन हाउस गैसों, नाइट्रोजन ऑक्साइड और कार्बन मोनोऑक्साइड के स्तर का पता लगा सकते हैं। इन आंकड़ों को इंटरनेट पर भेजकर दुनिया भर में प्रदूषण के स्तर को दर्शाया जाता है।

विश्व में स्मार्ट शहरों की बात करें तो आबूधाबी में मसदर से लेकर दक्षिण कोरिया के सोंगदो तक नाम उभरते हैं। सिंगापुर, स्टॉकहोम और कैलिफोर्निया में आईबीएम यातायात के आंकड़े जुटा रही है और जाम लगने से एक घंटे पहले ही भविष्यवाणी कर रही है। रियो में कंपनी ने एक नियंत्रण केंद्र बनाया है जहां पूरे शहर में लगे सेंसर और कैमरों से आंकड़े जुटाए जाते हैं। अमरीकी शहर डुबुक में एक कंपनी स्मार्ट वाटर मीटर बना रही है और कम्युनिटी पोर्टल के माध्यम से लोगों को आंकड़े उपलब्ध करा रही है ताकि वे पानी की अपनी खपत को देख सकें। चीन भी दर्जनों ऐसे नए शहर बसा रहा है।

एक सिक्के के दो पहलू होते हैं और अच्छाई के साथ बुराई भी जुड़ी होती है। विशेषज्ञ स्मार्ट सिटी की संकल्पना से एक ओर तो उत्साहित हैं, तो दूसरी ओर स्मार्ट सिटी की ओर बढ़ते कदमों से चिंतित भी हैं। इंस्टीट्यूट ऑफ फ्यूचर के निदेशक और स्मार्ट सिटीज़: बिग डैटा और सिविक हैकर्स जैसी चर्चित पुस्तकों के लेखक एंथनी टाउनसेंड इस पर चिंता जताते हुए कहते हैं कि रियो में नियंत्रण केंद्र की

स्थापना एक प्रगतिवादी मेयर ने की थी लेकिन यदि इसकी कमान किसी बुरे आदमी के हाथ में आ जाए तो क्या होगा! क्या हम ऐसी क्षमताएं विकसित कर रहे हैं जिनका दुरुपयोग हो सकता है? एंथनी टाउनसेंड की आशंका वाजिब है और समाधान की मांग करती है।

किसी स्मार्ट सिटी की बात करें तो यह विचार नागरिकों के जीवन में सुधार लाने के लिए सबसे बड़े अवसरों पर ध्यान केंद्रित करता है। परिवर्तन की एक ऐसी नीति अपनाई जा सकती है, जो डिजिटल और सूचना प्रौद्योगिकी, शहरी योजनाओं की अत्याधुनिक कार्यप्रणाली पर आधारित हो। साथ ही जिसमें धूम्रपान, प्रदूषण जनित रोगों और दुर्घटनाओं में मरने वाले लोगों का प्रतिशत न के बराबर रहे।

हमारे देश में भी स्मार्ट सिटी बनाने का स्पंदन शुरू हो चुका है। वास्तव में स्मार्ट सिटी मिशन के तहत स्थानीय विकास को संभव बनाने और प्रौद्योगिकी की मदद से जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाने और आर्थिक विकास को गति देने के लिए भारत सरकार पहल कर चुकी है। फिलहाल इस मिशन में 100 शहरों को शामिल किया जाएगा और इसकी अवधि पांच साल (2015-2020) की होगी।

100 स्मार्ट शहरों को निश्चित मापदंडों के आधार पर राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के बीच वितरित किया गया है। इस सूत्र के आधार पर, प्रत्येक राज्य या केन्द्र शासित प्रदेश में कम से कम एक शहर होगा, और संभावित स्मार्ट शहरों की संख्या निश्चित होगी। स्मार्ट सिटी के वितरण की समीक्षा मिशन के क्रियान्वयन के दो साल बाद की जाएगी।

स्मार्ट सिटी बनाने की दिशा में द्वार खुल चुके हैं। आज स्मार्ट टीवी के साथ हमारे हाथों में स्मार्ट फोन जैसी कई युक्तियां आ चुकी हैं। हमें स्मार्ट बनाने के लिए कई ऐप काम कर रहे हैं। ऑन लाइन प्रणाली को बढ़ावा दिया जा रहा है और पेपरमुक्त प्रणाली पर बल दिया जा रहा है। आईबीएम, सीमैन्स, माइक्रोसॉफ्ट, इंटेल और सिस्को जैसी तकनीकी कंपनियां शहर में जल के रिसाव से लेकर वायु प्रदूषण और ट्रैफिक जाम तक हर समस्या को सुलझाने के लिए सॉफ्टवेयर उपलब्ध करा रहे हैं। आज आईबीएम के पास दुनिया भर में लगभग 2500 स्मार्ट शहरों की परियोजनाएं हैं। सम्बंधित विशेषज्ञों का मानना है कि वे स्मार्ट शहर की अपनी परियोजनाओं में लोगों को साथ लेकर चलती है। डबलिन में कंपनी ने सिटी काउंसिल के साथ मिलकर पार्कया ऐप्स तैयार किया है जो लोगों को शहर में पार्किंग की जगह ढूंढने में मदद कर रहा है।

आने वाले समय में स्मार्ट सिटी का सपना सच होने वाला है। वह दिन दूर नहीं जब हमारे शहर में बिजली के ग्रिड से लेकर सीवर पाइप, सड़कें, कारें और इमारतें हर वस्तु एक अत्याधुनिक नेटवर्क से जुड़ी होगी यानी स्मार्ट होगी। घरों और कार्यालयों में लगे बिजली के उपकरण आवश्यकतानुसार अपने आप बिजली बंद करेंगे, स्वचालित कारें खुद अपने लिए पार्किंग ढूंढेंगी, स्मार्ट कैमरे हमारी सुरक्षा के लिए तैनात रहेंगे, यहां तक कि घर के बाहर रखा हमारा कूड़ादान भी स्मार्ट होगा।

लेकिन इन सभी को नियंत्रित करने के लिए अभी हमारे पास स्मार्ट सोच की कमी है। स्मार्ट सिटी बनाने से पहले अपनी सोच को स्मार्ट बनाने की आवश्यकता है साथ ही अपने दैनिक जीवन में बिजली-पानी और प्राकृतिक संसाधनों की बचत करने की आदतों का विकास भी ज़रूरी है। शिक्षित होने के बावजूद आज हमारे घरों में कूलरों का पानी नहीं बदला जाता और उस पानी में एडीज़ मच्छर प्रजनन कर डेंगू रोग का प्रसार करते हैं। 'आप कैमरे की नज़र में हैं' जैसे वाक्यांश जगह-जगह देखने को मिल जाते हैं, घटना घट जाती है लेकिन कैमरा नहीं देख पाता क्योंकि या तो कैमरा देखने की स्थिति में नहीं होता या वहां कैमरा होता ही नहीं और हद तो तब हो जाती है जब रात-दिन सेवा प्रदान करने वाले स्मार्ट शहर की प्रतीक एटीएम मशीन को ही चोर उखाड़ ले जाते हैं। आज घरों की टंकियों में पानी भरने के बाद उनसे पानी बहता रहता है। हर घर और कार्यालय में बिजली की बरबादी होती रहती है। लोग पान-पुड़िया खाकर अपना स्वास्थ्य तो खराब करते ही हैं साथ ही सड़कों को गंदा करते देखे जा सकते हैं। अतः स्मार्ट सिटी बनाने से पहले हमें अपनी सोच को स्मार्ट बनाने की ओर अग्रसर रहना चाहिए और आशावान भी रहना चाहिए, हम होंगे स्मार्ट एक दिन। ***(स्रोत फीचर्स)***